Q. प्लेटो के आदर्श राज्य का परीक्षण करें?

Ans: प्लेटो ने अपनी कृति रिपब्लिक में एक आदर्श राज्य का प्रतिपादन किया है। उसका विचार है कि उत्तम जीवन के लिए उत्तम राज्य का होना आवश्यक है। उनका कहना है कि भूमि सम्पत्ति धन के भौतिक स्वामित्व के प्रति लगाव लोगों को भ्रष्ट बना देता है। उनका विचार यह है कि परिवार तथा संपत्ति आदि पर उनका कोई व्यक्तिगत स्वामित्व नहीं होना चाहिए। प्लेटो के राज्य संबंधी विचारों का विवेचन हम निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत कर सकते हैं :-

राज्य की उत्पत्ति :- प्लेटो ने राज्य और समाज में कोई अंतर नहीं माना है ऐसा होने का कारण यूनान का वातावरण है, जिसमें वह पैदा हुआ तथा बड़ा हुआ। आकार व जनसंख्या के दृष्टि से यूनान के नगर-राज्य बड़े रकता बद्ध थे। प्रायः प्रत्येक नागरिक किसी-न-किसी रूप में राज्य कार्य में भाग लेता था। और व्यक्ति का

संपूर्ण जीवन राज्य के कार्य क्षेत्र में समाप्त हुआ था। यही कारण है कि राज्य व समाज प्लेटो को एक प्रतीत हुआ।

प्लेटो के अनुसार राज्य व्यक्तियों का उत्पन्न है। उनके अनुसार संपूर्ण विश्व विचारों की उत्पत्ति है। विचारशक्ति, आत्मशक्ति और वासनाशक्ति के जो तीन तत्व मनुष्यों में पाये जाते हैं, वे ही एक विकासित रूप में राज्य की जनता के विभिन्न वर्गों के रूप में पाये जाते हैं।

राज्य की उत्पत्ति मानव जाति की कठोर आवश्यकताओं के कारण होती है। जीवित रहने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी कुछ कठोर आवश्यकताएँ पूरी हो और उन आवश्यकताएँ की पूर्ति के लिए उसे अपने साथियों से सहयोग करना पड़ता है और इसी से राज्य आरंभ होता है। प्लेटो के अनुसार मानव स्वभाव में तीन बातें मुख्य हैं - आवश्यकताओं की विविधता, मनुष्य की स्वयं अपर्याप्तता तथा पारस्परिक पर निर्भरता। जीवित रहने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी कुछ न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करनी पड़ती है। रोटी, कपड़ा, मकान इसी कोटि में आते हैं।

मनुष्य केवल जीवित ही नहीं रहता बल्कि वह श्रेष्ठ ढंग से जीवित रहता है और उन्नति करता है। इसलिए कहा जाता है कि मनुष्य केवल प्राणी ही नहीं बल्कि वह श्रेष्ठ प्राणी और उन्नतिशील प्राणी भी है। फलतः आवश्यकताएँ बढ़ती रहती हैं वह अपनी आवश्यकताएँ की पूर्ति स्वयं नहीं कर सकता। इसके लिए वह अपने सहयोगियों पर निर्भर रहता है, इस कारण प्लेटो कार्यों के विशिष्टीकरण नीति का प्रतिपादन करता है।

और इस बात पर बल देता है कि उचित यही है कि प्रत्येक व्यक्ति वही कार्य करे जिसे करने के लिए वह अपनी स्वभाविक प्रवृत्तियों के कारण सबसे अधिक योग्य हो।

इस प्रसंग में प्लेटो ने कहा है कि "कार्य तभी अच्छा होता है, जब कार्य करने वाले का केवल वही एक पेशा हो जो उसका स्वभाविक हो और अन्य वस्तुओं को छोड़कर वही ही सही समय पर करे।" अपने जीवन की कठोर वस्तुएँ को छोड़कर वह उसे ही सही समय पर करें। अपने जीवन की कठोर आवश्यकताए की पूर्ति के लिए पारस्परिक निर्भरता के बन्धनों में मनुष्यों का साथ-2 रहना राज्य का प्रारंभ है।

प्लेटो ने राज्य की वर्गीय संरचना व उसके विकास पर भी प्रकाश डाला है। उसके अनुसार राज्य के विकास का पहला चरण उत्पादक वर्ग है प्रारंभ में लोग केवल कृषक होता है अपने को श्रेष्ठ बनाने के परिणामस्वरूप लोग व्यापारि बनते है, व्यापारी किसी अन्य वर्ग के लोग नहीं होते है क्योंकि वे भी उत्पादक वर्ग के ही होते है। जब लोगों में भूमि प्राप्त करने की लालसा बढ़ी और अधिकार जमाने की प्रवृत्ति का उदय हुआ साथ ही जब लोग समृद्ध हुए तो इस बात का भी भय बढ़ा कि कोई विदेशी उन पर आक्रमण न कर दे और जन-जन का विनाश न हो।

जनता का दूसरा वर्ग योद्धाओं का वर्ग अस्तित्व में आया। शांति के समय में वे आक्रमण से राज्य की रक्षा करते थे। युद्ध काल में उनका आक्रमण करना, भूमि छीनना आदि होता था।

जिससे बढ़ती हुए आबादी के लिए रहने का स्थान प्राप्त हो सके तथा व्यापारियों के लिए बाज़ार मिल सके। राज्य के जीवन में यह दूसरा चरण है जिसको अस्तित्व में लाने का कारण आर्थिक होता है। इस समय तक समाज में दो वर्ग उत्पादक वर्ग और सैनिक वर्ग अस्तित्व में आ जाते है।

शीघ्र ही आंतरिक विग्रह उत्पन्न होते है निवासियों के हित परस्पर टकराते है। योद्धाओं में भी विग्रह हो जाता है। ऐसी स्थिति में सामंजस्य पूर्ण व्यवस्था स्थापित करने की समस्या उठ खड़ी होती है। इस कारण तीसरा और अंतिम वर्ग अस्तित्व में आता है, जिसे प्लेटो ने संरक्षक का वर्ग कहा है।

संरक्षक वर्ग राज्य का शासक वर्ग होता है। यह राज्य में व्यवस्थाताए बनाए रखता है और लोगों को अपने-2 कार्य क्षेत्र में बनाये रखने का कार्य करता है। इस प्रकार राज्य की स्थापना इसके अंतिम रूप में हो जाती है।

राज्य का स्वरूप:—

प्लेटो ने राज्य को मानव आत्मा का प्रतिबिंब अथवा व्यक्ति का वृहत रूप माना है। राज्य का स्वरूप आणविक नहीं वरन आवयविक है। शरीर अपने पूर्ण राज्य में एक इकाई होता है और उसका रूप एक समग्रता का होता है, जिनके अंगों को पृथक नहीं किया जा सकता है। राज्य की जनसंख्या के विभिन्न वर्गों की स्थिति ऐसी ही है और केवल वे अपने-2 ही कार्यों कर सकते है। प्लेटो ने इस बात पर बल दिया है कि

मानव शरीर में जो सामंजस्य बना रहता है। वह इस कारण से होता है कि प्रत्येक अंग अपने क्षेत्र में अपना कार्य करता है और दूसरे नहीं झगड़ते। मानव शरीर की ये विशेषताएं ही राज्य की विशेषताएं हैं। राज्य एक पूर्ण है तथा इसका निर्माण करने वाले व्यक्ति इसके अभिन्न अंग हैं, केवल राज्य में रहकर ही व्यक्ति अपना विकास कर सकता है और अपनी पूर्णता प्राप्त कर सकता है।

उत्पादक वर्ग मुख्य रूप से किसान एवं मजदूर होते हैं, इस वर्ग में वे लोग आते हैं, जिनमें आत्म-शक्ति की प्रधानता होती है। आत्म-शक्ति साहस की प्रेरणा उत्पादन करती है तथा सैनिकों को शांति व युद्ध, सुरक्षा व आक्रमण दोनों में ही संयम का कार्य करना होता है।

तीसरा वर्ग संरक्षकों का होता है इस वर्ग में वे ही लोग आते हैं, जिनमें विवेक शक्ति की प्रधानता होती है। विवेक शक्ति है, उनमें बुद्धिमत्ता ज्ञान व गुण उत्पन्न करती है। शासकों में उन गुणों का होना आवश्यक है। इस वर्ग का कार्य राज्य में सामंजस्य व्यवस्था व एकता बनाए रखना होता है।

इस प्रकार राज्य मानव आत्मा का प्रतिबिम्ब है, जिसके तीन तत्वों के आधार पर राज्य के लोगों का तीन वर्गों में निर्माण होता है, उसने उत्पादकों को पीकतल व्यक्ति सैनिकों को रजत तथा संरक्षकों को स्वर्ण व्यक्ति की संज्ञा दी है।